6

निज हित कारज करना...

निज हित कारज करना, रे भाई! निज हित कारज करना।
जनम मरन दुख पावत जातें, सो विधि बन्ध कतरना।।
निज हित कारज करना...

ज्ञान, दरश अरु राग, फरस रस, निज पर चिन्ह भ्रमरना।
सन्धि भेद बुधि छैनी तें करि, निज गहि, पर परिहरना।।1।।
निज हित कारज करना...

परिग्रही अपराधी शंके, त्यागी अभय विचरना।
त्यों पर चाह बन्ध दुखदायक, निज गहि, पर परिहरना।।2।।
निज हित कारज करना ...

जो भव भ्रमण न चाहै तो, अब सुगुरु सीख उर धरना।
'दौलत' स्वरस सुधा रस चाखो, ज्यों विनसे, भव भरना।।3।।
निज हित कारज करना ...

हे भाई! अपना आत्महित करो। जिन कर्मों के बन्ध से जन्म-मरण का दुख प्राप्त होता है उन कर्मों का नाश करो। हे भाई! अपना आत्महित करो।।टेक।।

ज्ञान-दर्शन और राग, स्पर्श, रस, आदि में अपने और पराये की पहचान करना। तुम ज्ञान रूपी छैनी से आत्म गुणों और पर द्रव्यों के गुणों के बीच पहचान करके आतमा को ग्रहण करना और पर का त्याग करना।।१।।

परिग्रहवान सदा अपराधी और शंकाशील होता है और परिग्रह का त्यागी निर्भय होकर विचरण करता है। जो इच्छा और बन्ध दुख देने वाले हैं ऐसे पर भावों को दूर करके अपने आतमा का ग्रहण करो।।२।।

कविवर पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि हे भाई! यदि संसार में परिभ्रमण नहीं करना चाहते हो तो श्रीगुरु के उपदेशों को हृदय में धारण करो और अपने आत्मरस के अमृत का स्वाद लो, जिससे संसार के दुखों का नाश हो जाये।।३।।